सद्गुरु तत्व बोध
SADGURU
TATV BODH

नई दिल्ली
अंक – 123

श्री साई शके : 31
अगस्त – 2013

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com
Web : saishraddha-world.com

Patron
Lalita Bhavani Shankar Bhatte

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

Overseas
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

Printed By
Shaarp Advertising
Cell : 09810284136

Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

।। ऊँ श्री साईनाथाय नमः ।।
।। ऊँ श्री सद्गुरूनाथ दादाय नमः ।।

गुरूबंधुभगिनीयों से

वं. दादाजी ने यह कई बार कहा है कि विभुतियों का यह कार्य वहाँ से शुरू होता है जहाँ मानवी बुद्धि का अंत होता है। इसका अनुभव हम आज भी ले रहे हैं और आगे भी लेते रहेंगे। लेकिन यह कार्य जो मानवीय बुद्धि के परे है, वही कार्य आज मानवीय माध्यमो से ही अखंड अवस्था में कार्यान्वित हो रहा है और इसकी मानवीय माध्यमों को वं. दादाजी ने सेवक यह संज्ञा प्रदान की है, यानि हम सभी भक्त जो आज इस कार्य का लाभ ले रहे है। वैसा ही कार्य (1) मध्यस्तों के माध्यम से ही आगे चलने वाला है ऐसा पं. पू. बाबा का कृपाशीर्वाद हर एक कार्य केन्द्र को है। आज जिन मध्यस्थों द्वारा ईश्वरीय बनाई हुई अवस्था, जगत कल्याण के कार्य करने में कार्यान्वित हो रही है इसका विचार कर, सेवक को कार्य केन्द्रों पर कार्य करने का प्रयत्न काया–वाचा–मन से करना है ऐसी ईश्वरीय प्रेरणा को PINDI TO BRARNANDI AND BRAHANANDI TO PINDI कह सकते हैं।

इस कार्य की एक खासियत यह है कि वं. दादाजी ने इस कार्य में कोई भी बात छुपा कर (SECRET) नहीं रखी; उन्होंने पारमार्थिक सभी अनुभवों का शास्त्रीय विवेचन किया और पहले उसका अनुभव लेकर फिर उसकी THEORY बनाई। मतलब PRACTICAL पहले और साथ साथ THEORY को EXPLAIN किया। आज संसार में अन्य साधक जो ईश्वरीय उपासना करते हैं उनको अगर हमने पूछा कि आपको किस चीज की प्राप्ति हुई है और जगत कल्याण के प्रति उसका क्या लाभ है तो शायद ही कोई बता पाये। लेकिन वं. दादाजी ने सभी साधनों का अनुभव दिया और उन्हें सिद्ध किया। तथा आज मध्यस्थों द्वारा ब्रह्माण्ड से भी वही कार्य करा रहे हैं।

इस कार्य में आने वाले भक्तों के विमोचन होकर उन्हें दीक्षाएँ देने का प्रबंध वं. दादाजी ने कर रखा है। जैसे–जैसे आने वाले भक्त का देहिक एवं

आत्मिक विकास होता जायेगा उस प्रकार उसके जीवन में विमोचन कार्यान्वित होने लगते हैं आऔर उसकी के साथ गुरू भक्ति को वं. दादाजी ने पाँच भागों में भक्तों के जीवन में संक्रमित किया। (1) वंश विमोचन के साथ उपासना दीक्षा, (2) कर्मविमोचन के साथ नामःस्मरण दीक्षा, (3) ऋणमोचन के साथ अनुग्रह दीक्षा, फिर गुरू दीक्षा, कारण दीक्षा और महाकारण दीशा (DIRECTION)।

श्री गुरू ने यह दीक्षाएँ हम सभी को अभयदान के रूप में दी है वरना अनेक जन्म लेकर भी इन्हें प्राप्त करना मुमकिन नहीं है। लेकिन इन्हें हम आज कितना धारण कर पाये इसका अनुमान हमें खुद को खुद के बारे में लगाना है। इसके साधन जो वं. दादाजी ने सिद्ध करके दिये है वे आरती साधना, कामकाज, ऊँकार साधना, मुलाकात साधना और अनुष्ठान यह है। यह दीक्षाएँ हम सभी के माध्यम में कार्यान्वित हो रही है, इसीलिए तो हम सभी इस कार्य से जुड़े हुए है लेकिन जब दीक्षा पूरी तरह से धारण होगी तो दृढ़ अनुभव हमें किस प्रकार आयेगा, वह वं. दादाजी ने विवेचन किया था, उसका संक्षिप्त रूप निचे दिया है :

1) उपासना दीक्षा : इसके मायने है, जो उप–आसन हमें श्री गुरू ने दी है उसके साथ दृढ़ रहना, संकल्पित रहना। जब हमारी उपासना में निश्चितंता और नियमितता आती है तब यह दीक्षा कार्यान्वित होती है। तब हम कार्य केन्द्रों पर न जाने के लिए बहाने नहीं बनाते, साधना नियमित रूप से होनी है, जीवन में इस उपासना को सबसे ज्यादा प्रावधान (IMPORTANCE) हम देते है, तब उपासना दीक्षा धारण होती है।

2) नामःस्मरण दीक्षा : दिन–रात नामःस्मरण करना, नामःस्मरण दीक्षा नहीं है, चलते समय नामःस्मरण करेंगे तो कचरे से गुजरते समय ड्राईविंग करते समय गुस्सा आया तभी गुस्से से नामःस्मरण करेंगे, बस–ट्रेन में नामःस्मरण करते रहना यह ईश्वर की अवहेलना (INSULT) है। नामःस्मरण दीक्षा धारण होना मतलब ऊँकार साधना में जितना बताया उतना ही नामःस्मरण प्रतिदिन करना और उसके साथ उस नाम का स्मरण, उसकी श्रद्धा अपने अंतःकरण में हमेशा रखना। इसका अनुभव किस प्रकार आता है, तो पहले हमारे जीवन में कोई तकलीफ आती थी तो हम काफी परेशान रहते थे, कल क्या होगा इस विचार से चिंतीत रहते थे लेकिन आज वह चिंता नहीं है, गुरूकृपा से सब कुछ ठिक ही होगा ऐसा आत्मविश्वास हम सभी को रखना चाहिए। इस प्रकार का दृढ़ विश्वास और निष्ठा हमारे मन में हमेशा रहना मतलब नामःस्मरण दीक्षा धारण होना। यह कर्म विमोचन के साथ दी इसलिए आने वाले कर्म की चिंता अब नहीं होती।

अनुग्रह दीक्षा : यह तीसरी दीक्षा पहली दो दीक्षाओं के बाद वं. दादाजी ने दी; जिससे कई पीढ़ियों से हम देव–देवताओं के अनुग्रहीत थे। हमारे खून के जिन्स भी वह शक्ति धारण करने के लिए TUNE UP थे लेकिन उस शक्ति को धारण करने के लिए आज अपना देह और आदतें (आचरण) योग्य नहीं रही इसलीये वं. दादाजी ने हमें और हमारी आने वाली पीढ़ियों के गुरू अंकित, गुरू के अनुग्रह में कर दिया। हमारी परवरिश करने की जिम्मेदारी अब उन्होंने उठाई है। हमारे सभी ऋणानुबन्ध अब गुरू अंकित हो गये इसलिए ऋणमोचन के साथ श्री गुरू ने अनुग्रह दीक्षा प्रदान की।

गुरू दीक्षा : यह एक महान दीक्षा है, जिससे आनेवाला भक्त, जिस दुःख से पीढ़ित रहता है, वह गुरूकृपा से अपना विकास प्राप्त करके अपनी अति–सामान्य अवस्था से गुरूस्वरूप या साधक का स्वरूप प्राप्त कर लेता है जिससे जिस प्रकार के दुःख से जो आज आने वाले भक्त उनका दुःख वह साधक गुरू कृपा से दूर कर पाता है। इसलिए सिर्फ कामकाज करना यह साधन नहीं है तो जीवन में जो भी दुःखी कष्टी लोग मिलते है उके लिए प्रार्थना करके गुरूशक्ति वहाँ कार्यान्वित होती है और कार्य करती हैं इसका अनुभव हमें तब आ सकता है जब हमें लोग कहे कि, “आपसे मिलकर, आपसे बात करके हमें अच्छा लगताा है।” मतलब गुरूशक्ति हमारे माध्यम से कार्यान्वित हो रही है; लेकिन उसके लिए अनुकूल आचार, उच्चार और विचार रखना यह हमारा कर्त्तव्य है।

कारण दीक्षा : इस दीक्षा में हमारे जीवन का कारण उदित होकर उसकी पहचान हमें दिन रात रहती है। आज भी अगर हम सेमीनार या मुलाकात सुनने के लिए बैठे है मतलब कारण उदीत हुआ है लेकिन थोड़े ही समय में हमारा जीवन अन्य विषयों के आधिन हो जायेगा। जब कारण दीक्षा धारण होगी तक उस कारण की पहचान

हमें दिन–रात रहेगी और अन्य कोई भी विषय हमारे उपर हावी नहीं हो पायेगा, बल्कि सभी विषय हमारे जीवन के कारण में विलीन हो जायेंगे। जैसे कोई अच्छे कलाकार की साधना होती है वैसे ही हमारा प्रधान विषय गुरू और गुरूकार्य यहीं रहता है।

इसके आगे महाकारण दिशा है मतलब ईश्वर, के विभुतियों के अस्तित्व का जो कारण है, वह महान कारण हमारे माध्यम से दिशा देता है। तब हमारे तन्मात्रों का कार्य मानवीय बुद्धि से परे होता है क्योंकि गुरू शक्ति वह कार्य साधक से माध्यम से करवाती है।

यह असामान्य साधन प्राप्त कर देने के लिए वं. दादाजी ने हमें दीक्षाएँ प्रदान की है। तब उन्होंने कहा था कि, "दिक्षाएँ देने के पहले जो तुम्हारी व्यक्त और अव्यक्त अवस्था का प्रमाण 75% और 25% था वह मैंने अब 50% और 50% कर दिया है।

	व्यक्त अवस्था	**अव्यक्त अवस्था**
दीक्षाओं के पहले	75:	25%
दीक्षाएँ देने के बाद	50%	50%

आगे जैसे जैसे तुम अपनी "व्यक्त अवस्था कम करोगे और अव्यक्त अवस्था देहिक विचारों से खाली रखोंगे वैसे–वैसे तुम्हें प्रेरणा या ईश्वरीय संदेश समझ में आ सकते है।"

इसका मायना क्या है यह समझने का हम प्रयास करते है जिससे उन्हें जो विकास हमसे अपेक्षित है उसके लिए हम भी कुछ प्रयत्न कर पायें :

हमारा मेंदू (BRAIN) STORAGE का कार्य करता है और विचार बुद्धि माध्यम से आते है। बुद्धि MEMORY का CHECK करके उस प्रसंग के और प्रवाहित होने वाले कर्म के अनुसार विचार प्रकट करता है। उस विचार से जो REACTION हम देते है वह व्यक्त अवस्था है, मतलब हमारे देहिक माध्यम से वह विचार व्यक्त करना। उसी समय जो भावना हमारे मन में प्रकट होती है वह अव्यक्त अवस्था है।

व्यक्त अवस्था	**अव्यक्त अवस्था**
MOTION	**EMOTION**

आज हर एक विचार हम व्यक्त करने की कोशिश करते है फिर वह POLITICS हो या SOCIETY के PROBLEMS या अन्य कोई। जितनी प्रखर व्यक्त अवस्था REACTION उतनी ही प्रखर अव्यक्त EMOTIONS अवस्था होते है। किसी व्यक्ति ने अगर हमसे पैसा लेकर वापस नहीं किया या किसी ने हमें तकलीफ दी होगी तो आज उसका जिकर होने के बाद या वह व्यक्ति सामने आने के बाद हमारा REACTION और EMOTION कितना संतुलित रहता है?

अगर हमारी व्यक्त अवस्था कम हो ई मतलब जीवन के अन्य SECONDARY विषयों में अपना मत प्रदर्शन बरने के बजाय उसके लिए अगर हम श्री गुरू से प्रार्थना करें ओर उसी श्री गुरू के उपर की श्रद्धा से हमारी अव्यक्त अवस्था, भावना, अपने EMOTION अगर न संयमित (CONTROL) करें या न आने दें तो यह अव्यक्त अवस्था खाली रहेगी, तब उसमें ईश्वरीय प्रेरणा प्रकट होगी। वं. दादाजी कहते थे कि ईश्वरीय प्रेरणा यह नैसर्गिक चीज है, वह बरसात जैसी है, जो कि सिर्फ एक घर पर या एक माध्यम पर नहीं होती : जो उसे धारण कर सकता है, वह उसे समझ सकता है। वं. दादाजी के पास से एक भक्त रू 20 हजार लेकर गया था, जो कि लौटाने से या मिलने सभी भी मना कर रहा था। एक दिन वं. दादाजी उस व्यक्ति के पास गए और कहा कि, "मैं दिनभर सिर्फ मेरे गुरू को याद करता हूँ : तुम मेरे लिये मेरे गुरू से बढ़कर नहीं हो, जिससे मैं तुम्हें याद करूँ तो तुम्हें पैसा देना है तो दे दो, बाद में दे दो, या मत देना, इसके आगे मुझे याद भी नहीं रहेगा कि मैंने कभी तुम्हें पैसे दिये थे। कार्य का लाभ लेने के लिए तुम कभी भी आ सकते हो अब हमारे बीच पैसों का जिकर कभी भी नहीं होगा।"

आज हमारे जीवन में ऐसे कितने विषय, कितने व्यक्ति है जो हमें हमारे गुरू से ज्यादा IMPORTANT है? अगर कोई नहीं तो उनका जिकर होते ही क्या हमारी व्यक्त और अव्यक्त संतुलित रहती है? इसकी आदत हमें अपने आपको डालनी होगी; तो ही हम हमारे जीवन में इस गुरूकार्य का लाभ लेकर अपना जीवन सार्थक कर सकते है। इसकी शक्ति गुरूकृपा से हम सभी को प्राप्त हो, यही परम् पूज्यनिय बाबा और श्री सद्गुरूनाथ दादा, के चरणों में विनम्र प्रार्थना है।

।। शुभं भवतु ।।

जनम जनम का सेवक

1. Detach your mind form the object of the sense and concentrate on that All Prenading Power. Your medition will.........

2. When you concentrate on me, the functions of your mind will unite and the distinction heween the meditation, the act of meditation and the object meditated upon, will vanish.

3. We have not come to the world to weep. The Lord has given us this human birth for a purpose, to work for him, to laugh and to be happy.

4. By using the word 'similar', still a distinction remains, even that is not tolerated by the Guru, even for a moment, because Guru's existance is not possible without the discipt; and the discipte shoud not be separate from the Guru.

5. In the heart of all things and happenings, it is 'He' who exists and at work. When this faith is ours, God becomes our hever failing companion.

सूचना

इस साल की होने वाली सेमीनार "द्वारकामाई" जयपुर में 18 अक्टूबर से 22 अक्टूबर 2013 तक होना निश्चित हुआ है अधिक से अधिक गुरूबन्धु–भगनी आने का प्रयत्न करें। आने की सूचना देहली केन्द्र पर सितम्बर 2013 तक भेजने का कष्ट करें।

विनम्र निवेदन

अति हर्ष के साथ आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों को सूचित किया जाता है कि मासिक पत्रिका "तत्व बोध" का आगामी अंक एवं अन्य सूचना वेबसाइट पर एवं मेल द्वारा प्रेषित की जाएगी।

अतः आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों से अनुरोध है कि आप सभी अपना ई–मेल पता एवं अन्य जानकारी यथाशिघ्र निम्न पते पर प्रेषित करें :

Sri Saikalp Adhyatm Sanstha

"Sai Niketan"

5, Jasola Vihar, New Delhi - 110025 Telephone : 26956561

E-mail : saikalp@gmail.com, dadab6@hotmail.com

Please send your yearly subscriptions as early as possible